जॉन डीवी
JOHN DEWEY

Pragmatism शब्द का शाब्दिक अर्थ है - व्यवहारवाद सब मूल्यों, विचारों और निर्णयों का सत्य उनके व्यावहारिक परिणाम में पाया जाता है। यदि उनके परिणाम सन्तोषजनक है - तो वे सत्य है अन्यथा नहीं।

डीवी का जीवन परिचय :- जॉन डीवी का जन्म 1859 में अमेरिका के वारमॉण्ट के बर्लिंगटन नगर में हुआ था। इनकी प्रारंभिक पढ़ाई अपने मातृभूमि के विद्यालय में हुई, प्रारंभिक शिक्षा पूरा करने के बाद ये उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वारमॉण्ट विश्वविद्यालय गए, जहाँ से उन्होंने बी०ए की उपाधि प्राप्त की।

1894 में ये दर्शन व शिक्षा दोनों पढ़ाने लगे, परन्तु इनका झुकाव शिक्षा की ओर ज्यादा होने लगा, और इसी झुकाव के कारण इन्होंने एक प्रयोगशाला का निर्माण किया जिसमे 4-14 वर्ष की आयु के बच्चों को प्रवेश दिया जाता था और प्रत्येक कक्षा में 8-10 विद्यार्थियों को रखे जाते थे, तथा यहाँ शिक्षा से संबंधित आलोचनात्मक व्याख्या होती थी और नए-नए निर्णयों पर पहुँच कर नए-नए सिद्धान्तों की खोज होती थी अतः इसके इस प्रयोग के द्वारा इन्हें शिक्षा प्रयोगशाला की संज्ञा दी गई।

प्रयोगशाला प्रयोगात्मक विद्यालय की स्थापना के बाद डीवी ने अपने विचारों को लेखबद्ध करना शुरु किया, और 1896 में इनकी सर्व-प्रथम रचना प्रकाशित हुई, जिसका नाम (Interest as related to will, इसके बाद कई पुस्तकें लिखे जैसे -

- The School and the Society.
- The Child and the Curriculum
- Relation of theory to practice in the Education of Teachers.
- The School and the Child
- Moral principles in Education.

ड्यूवी का दर्शन (DEWEY's PHILOSOPHY)

ड्यूवी के शैक्षिक विचारों को समझने के लिए उसके मूलभूत दार्शनिक विचारों का जानना आवश्यक है। ड्यूवी के विचारों को निम्न विचारों पर ध्यान दिया जा सकता है -

1) ड्यूवी के मन संबंधी विचार :- (DEWEY's View about Mind)

ड्यूवी का मत है कि मन विकास का परिणाम है, उसके अनुसार मन जीवन की विविध सामाजिक तथा व्यवहारिक समस्या को हल करने के लिए की गई मानव क्रियाओं का परिणाम है। उनके अनुसार मानसिक शक्तियाँ जब दैनिक जीवन की सामान्य क्रिया को पूर्ण करने के लिए उपयोग में लायी जाती है, तब उनका विकास होता जाता है। उसने मन को मनुष्य की अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए महत्वपूर्ण साधन माना है।

(i) ज्ञान संबंधी विचार (View about Knowledge) :-

ड्यूवी ज्ञान को मन से पृथक मानते हैं, उनके अनुसार "विचार" केवल मन की क्रियाएँ ही है। विचार व्यक्ति द्वारा वातावरण की वस्तुओं को नियंत्रित करने की प्रक्रिया मे विकसित किए जाते है, व्यक्ति दुःखों को दूर करने या संतुष्टि प्राप्त करने के लिए वातावरण को नियंत्रित करता है. ड्यूवी इस बात मे विश्वास नही करता कि ज्ञान क्रिया का मार्गदर्शक है, वरन उसके अनुसार ज्ञान क्रिया का परिणाम है, अनुभव क्रिया द्वारा उत्पन्न होती है, अतः (इन्होंने ज्ञानार्जन के लिए प्रयोगात्मक विधि पर बल देता है)

(ii) चिन्तन की प्रक्रिया (The Process of Thinking)

ड्यूवी चिन्तन को सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण से अनुकूलन करने के हेतु एक साधन मानता है. उसका विश्वास है कि चिन्तन तथा मन एकान्त में नही होता है, क्योंकि उसके लिए किसी न किसी कारण, कठिनाई समस्या का होना आवश्यक है। उसने यह भी बताया कि यदि व्यक्ति की क्रियाएँ सफलतापूर्वक होती रहें तो चिन्तन की कोई आवश्यकता नही होगी, जब कभी कोई बाधा या कारण, या समस्या उत्पन्न होती है, तभी सोचने की आवश्यकता होती है। अतः व्यक्ति कठिनाई या कारण को दूर करने के लिए तत्पर होता है, अतः इनकी चिन्तन को क्रियाशीलता का कार्य कहा है।

(iii) दर्शन का उद्गम – समाज (The Origin of Philosophy-Society)

जॉन ड्यूवी दर्शन का उद्गम समाज को मानता है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए इन्होंने कहा है कि दर्शन-शास्त्र एक व्यावहारिक उद्देश्य होता है, जो जीवन की क्रियाओं पर प्रभाव डालता है, उसने बताया कि दर्शन पूर्व निर्धारित सत्य की प्रकृति पर विचार नहीं करता वरन् यह एक ऐसी वस्तु है, जो नवीन जीवन का निर्माण करता है। दर्शन में ही समाज की समस्याओं का प्रतिबिम्ब होता है। जैसे ही-व्यक्ति के समक्ष सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, वैसे ही वह उनके समाधानों के लिए क्रियाशील होता है, उसके द्वारा खोजे गए समाधान अपने सामान्य रूप के दर्शन का निर्माण करते हैं। ड्यूवी का कहना है कि व्यक्ति तभी इन ग्रंथियों का समाधान खोज सकता है, जब उसको शिक्षा द्वारा उन परिस्थितियों का सामना करने के योग्य बना दिया जायगा। इसी कारण ड्यूवी दर्शन का उद्गम स्थान – समाज माना है।

✕ ड्यूवी का शिक्षा सिद्धान्त (DEWEY'S PHILOSOPHY OF EDUCATION)

ड्यूवी शिक्षा एवं दर्शन के बीच कोई भेद नहीं मानता। उनके द्वारा यह कथन दिया गया कि – "अपनी सामान्य अवस्थाओं में ही शिक्षा सिद्धान्त ही दर्शन कहलाता है।"

"Philosophy is the theory of education in its most general phases."

इसको स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि दर्शन-शास्त्र सामाजिक न्याय का साधन है, और उसका

उद्देश्य समाज से है, इसलिए ड्यूवी अपनी शिक्षा दर्शन द्वारा जिसका एक व्यवहारिक लक्ष्य है, समाज के विचारों में स्पष्टता लाना जिससे व अपने समय की सामाजिक समस्याओं एवं ग्रंथियों का हल निकाल सकें।

शिक्षा का अर्थ :- ड्यूवी के शिक्षा दर्शन में **अनुभव** को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। ड्यूवी का मत है कि क्रियात्मक एवं निष्क्रिय - दोनों पहलू है, अनुभव का क्रियात्मक पक्ष प्रचलित दशाओं की व्यवस्था में कुछ न कुछ परिवर्तन लाता है, इसके निष्क्रिय पक्ष में हम क्रियाशीलता के परिणामों का अनुभव करते है। अर्थात् ड्यूवी का कहना है कि हमारे अनुभव के परिवर्तित एवं संशोधित होने का नाम ही शिक्षा है और इस परिवर्तन एवं संशोधन के साथ ही अनुभव, सामाजिक गुणों से युक्त हो जाता है, और इन गुणों को स्वयं में ~~प्रविष्ट~~ प्रविष्ट कराने के लिए वह व्यक्तिगत कुशलता पर बल देता है।"

"Education is the process of living through a continuous reconstruction of experience It is the development of all those capacities in an individual which enable him to control his environment and fullfil his possibilities."

इनके द्वारा दी गई शिक्षा सिद्धान्त को मुख्यत: इन तथ्यों पर आधारित है –

1) शिक्षा : जीवन की एक आवश्यकता है (Education is necessity of life)

2) शिक्षा : एक सामाजिक कार्य है (Education is a social function)

3) शिक्षा : मार्ग दर्शन है (Education is direction)

4) शिक्षा : अभिवृद्धि है (Education is growth)

(Child Centered education)

1) ड्यूवी का कथन है कि शिक्षा जीवन के लिए परमावश्यक है क्योंकि इसके अभाव में जीवन की प्रगति नहीं हो सकती ड्यूवी ने इस सिद्धान्त का खण्डन किया कि शिक्षा भावी जीवन के लिए तैयारी है। उन्होंने कहा कि बालक जिस कार्य में रुचि लेता है, उसे वह एकाग्र होकर करता है; अत: पुनर्निर्माण, परिवर्तन एवं संशोधन करता है। इसलिए शिक्षा जीवन है।

2) शिक्षा सामाजिक कार्य है, इसका अर्थ है कि, शिक्षा की प्रक्रिया सामाजिक है, दूसरे शब्दों में यह कह सकते है कि- व्यक्ति को

सामाजिक वातावरण में उस ही लाभप्रद ढंग से शिक्षा दी जाती है। व्यक्ति में सामाजिक चेतना एक आवश्यक तत्व है, व्यक्ति अपनी शक्तियों का विकास केवल सभ्य जीवन के आधार पर, सामाजिक वातावरण के माध्यम से कर सकता है। समाज अपने रीति-रिवाजों, परंपराओं, संस्थाओं, विचार पद्धति और क्रियाओं द्वारा बालक के चरित्र का निर्माण करता है।

(direction)

3) शिक्षा मार्गदर्शन है - बालक को शिक्षा देने का अर्थ है, उनका उचित मार्ग-दर्शन करना, ड्यूवी का विचार है कि बालकों को उचित अनुभवों के कार्य में पथ-प्रदर्शित करना ही शिक्षा है। इसके द्वारा बालक की शक्तियों को व्यक्तित्व की प्राप्ति के हेतु धीरे-धीरे पथ प्रदर्शित करना चाहिए। उनके अनुसार बालकों की अविकसित योग्यताओं, क्षमताओं, शक्तियों एवं रुचियों को इस प्रकार निर्देशित करना चाहिए कि वे व्यक्तित्व का विकास करने में समर्थ हो सके।

(Development)

4) शिक्षा-अभिवृद्धि है - प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार एवं वातावरण के अनुसार क्रिया और प्रतिक्रिया करता है, फलतः अपने प्रारंभिक रूप एवं स्वभाव से परिवर्तित होकर एक नई सूरत में आ जाता है, परिवर्तन की ये सब प्रक्रियाएँ (Process) अभिवृद्धि की प्रक्रिया है, इस लिए शिक्षा को प्रक्रिया कहलाते ही

शिक्षा का आधार :- (Bases of Education)

(1) मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Basis)
(2) सामाजिक आधार (Sociological Basis)

(1) मनोवैज्ञानिक आधार :- इनके अनुसार बालक की मूल प्रवृतियों एवं क्षमताओं, आवश्यकताओं, वृतियों का आधार माना है। इसी के आधार पर ही शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया जाना चाहिए। मनोवैज्ञानिक आधार के अन्तर्गत इन्होंने (i) बातचीत तथा विचारों के आदान प्रदान में रूचि (Int. in conversation & Communication)
(ii) खोज में रूचि (Interest in Inquiry)
(iii) सृजन में रूचि (Interest in Creativity)
(iv) कलात्मक अभिव्यक्ति में रुचि (Interest in Artistic Expression)

* डीवी ने इन्हें ही अपना आधार मानकर प्रयोगात्मक स्कूल में बालकों को शिक्षा प्रदान की थी इसे ही पाठ्यक्रम का आधार माना।

(2) सामाजिक आधार :- ड्यूवी ने शिक्षा के सामाजिक आधार को अधिक महत्वपूर्ण माना है। उसके अनुसार सामाजिक वातावरण ही उन स्थितियों को प्रदान करता है, जिनमें बालक अपने जीवन मूल्यों का निर्माण करता है। ड्यूवी सामाजिक पक्ष के अन्तर्गत स्थितियों, सभ्यता संस्कृति, परंपरा, रीति रिवाजों, आस-पड़ोस का वातावरण, समुदाय एवं सामाजिक संस्थाएं एवं उनकी क्रियाओं आदि को रखता है।

28 TUE January 2014

5th week • Day 028-337

December '13

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

January '14

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

शिक्षा का उद्देश्य (Aims of Education)

08.00 1) तात्कालिक उद्देश (Immediate Aim)

09.00 2) अनुभवों का सतत् पुनर्निर्माण (Continuous Reconstruction of Experience)

10.00

3) वातावरण के साथ अनुकूलन (Adjustment to Environment)

11.00

12.00 4) गतिशील एवं लचीले मन का निर्माण (Cultivation of Dynamic & Adaptable)

01.00

5) सामाजिक कुशलता (Social efficiency)

02.00

03.00 ## पाठ्यक्रम :-

04.00 1) उपयोगिता का सिद्धान्त (Principle of Utility)

05.00 2) रुचि का सिद्धान्त (Principle of Interest)

06.00 3) बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम (Child Centered Curriculum)

07.00

4) क्रियाशीलता का सिद्धान्त (Principle of Activity)

☎ @ ✉ 5) लचीलेपन का सिद्धान्त (Principle of Flexibility)

6) सामाजिक अनुभव का सिद्धान्त (Principle of Social Experience)

4) एकीकरण का सिद्धान्त (Principle of Integration)

शिक्षण विधि :- (Method of Teaching)

ड्यूवी ने परंपरागत विधियों का विरोध किया। उसने शिक्षण की परंपरागत विधियों के विरोध में ऐसी विधियों पर बल दिया जिनमें बालक क्रिया करके स्वानुभव द्वारा, सोच करके तथा प्रयोग करके शिक्षा प्राप्त करे।

ड्यूवी ने शिक्षण विधि के सिद्धान्त :-

(1) कार्य करके सीखना (Learning by doing)
(2) स्वानुभव द्वारा सीखना (Learning by self experience)

F	6	13	20	27	-	F	2	9	16	23	30
S	7	14	21	28	-	S	3	10	17	24	31
							4	11	18	25	-

→ **अनुशासन :-** इमूवी अनुशासन की परंपरागत धारणा के विरुद्ध था। उसको

08.00 बालक के आचरण को कृत्रिम साधनों के द्वारा नियमित करने में कोई विश्वास नहीं था।

09.00 उसने ~~सामाजिक जीवन~~ अनुशासन की स्थापना के लिए सामाजिक जीवन के महत्व पर बल

10.00 दिया।

Place of Teacher :- डीवी के अनुसार शिक्षक का स्थान ऐसा होना चाहिए जिससे वह बालकों के व्यवहार को समझ सके, बच्चों के मनोविज्ञान को समझ कर उसके जनतंत्रीय मूल्यों को निर्देशित कर सके। विद्यालय में स्वतंत्रता और समानता के मूल्य को बनाये रखने के लिए शिक्षक को बालकों से बड़ा नहीं समझना चाहिए। बालकों की निरीक्षण करके उसकी रुचियों, योग्यताओं और गतिविधियों को समझकर उनके अनुरूप कार्य पर लगाना चाहिए।

आलोचना (Criticism)

① सत्य को स्थायी न मानने से कठिनाई :- इनके अनुसार सभी सिद्धान्त देश काल सापेक्ष होते हैं। कोई भी दर्शन सदैव सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न दर्शन उपयोगी होते हैं और यह उपयोगिता ही सत्य है। यद्यपि इन्होंने व्यवहार से संबंधित सिद्धान्त को कुछ सही मार्ग दर्शक माना है।

② भौतिकवादी पक्षपात :- इनके सिद्धान्त में आदर्श के विरुद्ध भौतिकवाद के पक्ष में झुकाव दिखाई पड़ता है उनके अनुसार शिक्षा के द्वारा स्वतंत्रता समानता और भ्रातृत्व के जनतंत्रीय मूल्यों को प्राप्त करना कठिन है, क्योंकि आदर्शवादी आधार के बिना इन मूल्यों को कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

③ शिक्षा के लक्ष्य का अभाव :- डीवी ने जनतंत्रीय मूल्यों को प्राप्त करना शिक्षा का लक्ष्य माना है, किन्तु अधिकतर स्थानों पर वह शिक्षा का कोई पूर्व निर्धारित लक्ष्य नहीं मानता उनका कोई भी लक्ष्य निर्धारित नहीं किया जा सकता, उनके अनुसार शिक्षा व्यवस्था में कोई न कोई निश्चित लक्ष्य रखकर ही आगे बढ़ा जा सकता है, विद्यालय में विद्यार्थियों को सीखने का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होना चाहिए